श्री गुरुचरणकमलेभ्यो नमः

होलि साधनाएं - ०२-०३- २०२६

एवं

चंद्र ग्रहण साधना - ०३-०३-२०२६

(सायं ३:२० से सायं ६:५० तक (भारत में मान्य समय))

- भारत, उत्तर अमेरिका, दक्षिण अमेरिका, कॅनाडा, ऑस्ट्रेलिया आदि प्रदेश मे दिखेगा |
- भारत में ग्रहण समय -सूर्यास्त से सायं ६:५० तक |
- हैदराबाद में ग्रहण का समय सायं ६:२० से ६:५० तक है। पर साधक सायं ३:२० से सायं ६:५० तक का समय का उपयोग कर सकते हैं।

-गुरुकृपा

होलि साधनाएं

साधक या साधिकायें, पूर्व दिशा की ओर बैठे और सामने गुरु चित्र लगाकर पंचोपचार पूजन कर साधना आरंभ करे |

१) स्वर्णाकर्षण गुटिका साधना:

नौकरी प्राप्ति,अकस्मिक धन प्राप्ति, नया व्यापार, व्यापार वृद्धि हेतु यह साधना श्रेष्ठ है |

विधान: साधक / साधिका गुटिका की सिन्दूर आदि से पंचोपचार पूजन कर निम्न मंत्र की २१ माला जप कमलगट्टे की माला से या कोई भी लक्ष्मी माला से करे | भोग में मिठाई का प्रयोग करे |

मंत्र: || ॐ ह्रीं धनधान्यदिपतये स्वर्णाकर्षण कुबेराय समृद्धि देहि दापय स्वाहा ||

सामाग्री: कमल गट्टे की माला या कोई भी लक्ष्मी माला, स्वर्णाकर्षण गुटिका

जप संख्या: २१ माला

२) हिरण्य गर्भ लक्ष्मी प्रयोग:

विधान: लक्ष्मी यंत्र को पुष्पों के आसन पर स्थापित कर कमलगट्टे की माला से २१ माला जप करे | इस प्रयोग से लक्ष्मी कृपा, घर मे शांति एवं सौभाग्य वृद्धि हेतु श्रेष्ठ माना गया है |

मंत्र: || ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं ॐ नमः ||

सामाग्री: कमलगट्टे की माला, कोई भी लक्ष्मी यंत्र

जप संख्या: २१ माला

३) काली साधना:

यह साधना प्रयोग शत्रुबाधा निवारण, अभय प्राप्ती हेतु, रोग नाश,भूत-प्रेत बाधा निवारण आदि के लिये उपयोग में लाया जाता है |

विधान: इस हेतु काली यंत्र एवं काली हकीक माला अपने सामने रख कर उनकी पूजन करे | तेल का दीपक,धूप आदि का प्रयोग पंचोपचार पूजन करे और माथे पर सिन्दूर का तिलक कर २१ माला मंत्र जप करे | सामाग्री विसर्जित कर पूर्ण करे |

मंत्र: || क्रीं हूं ह्रीं फट् स्वाहा ||

सामाग्री: काली यंत्र, काली हकीक माला

जप संख्या: २१ माला

४) शीघ्र भाग्योदय साधना:

विधान: साधक गुरु पूजन कर, गुरु मंत्र कि ४ माला जप कर स्फटिक माला से २१ माला जप करे, तो शीघ्र भाग्योदय की इच्छा पूर्ण होगी और मनोवञ्छित कार्य संपन्न होग |

मंत्र: || ॐ ह्रीं भाग्योदयं निखिलेश्वराय नमः ||

सामाग्री: स्फटिक माला

जप संख्या: २१ माला

५) राहु - केतु दोष निवारण हेतु - होलिका प्रयोग:

विधान: अपने सामने काली उडिद के तीन ढेरी बनाये और उन पर तीन सुपारि रख कर होलिका, राहु एवं केतु स्थापित करे और ध्यान आदि से पंचोपचार पूजन अक्षता ,सिन्दूर, पुष्पो से करे | ग्रह बाधानिवारण माला से १८ माला निम्न मंत्र जप कर, प्रयोग के बाद समस्त सामाग्री तालाब या नदि में विसर्जित करे |

मंत्र: || क्लीं होलिकायै क्लीं ||

सामाग्री: ग्रह बाधानिवारण माला, काली उडिद

जप संख्या: १८ माला

६) शीघ्र विवाह , सौन्दर्य वृद्धि, अप्सरा सिद्धि, आकस्मिक धन प्रप्ति हेतु

अप्सरा साधना:

विधान: अप्सरा यंत्र एवं गुलाबि हकीक माला को शुद्ध जल से साफ कर अपने सामने पुष्प आसन पर स्थापित करे | उनकि पूजा अष्टगंध, ईत्र आदि से पूर्ण कर, अपनि इच्छ व्यक्त कर २१ माला जप करे | साधना / प्रयोग उपरान्त समस्त सामाग्री किसी शिवालय में चढा दे या वट वृक्ष के नीचे रख दे |

मंत्र: || ॐ श्रीं कांचनमाले आगच्छागच्छ स्वाहा ||

सामाग्री: अप्सरा यंत्र एवं गुलाबि हकीक माला

जप संख्या: २१ माला

७) रोग नाश प्रयोग:

विधान: पारद शिवलिंग पर त्राटक करते हुये रूद्र माला से ११ माला जप करे और हर माला के बाद १० बार भस्त्रिका प्राणायाम करे | होली को आरंभ करे अगले १५ दिनो तक नित्य यह क्रिया करने से सर्व रोगों का शमन होगा |

मंत्र: || ॐ ह्रीं ह्रीं सर्व रोग नाशाय फट् ||

सामाग्री: पारद शिवलिंग, रूद्र माला

जप संख्या: ११ माला

चंद्र ग्रहण साधना - ०३-०३-२०२६

साधक या साधिकायें , पूर्व दिशा की ओर बैठे और सामने गुरु चित्र लगाकर पंचोपचार पूजन कर,५ माला गुरु मंत्र जाप कर साधना आरंभ करे |

१) आकर्षण प्रयोग:

विधान: वैजयंति माला से ग्रहण काल मे २४ माला जप कर, अपने गले में वह माला धारण करने से आकर्षण मे वृद्धि होगी |

मंत्र: || ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ||

सामाग्री: वैजयंति माला

जप संख्या: २४ माला

२) नव ग्रह साधना:

विधान: सूर्य की तेज, चंद्र की शीतलता एवं ग्रह पीडा निवारण हेतु, तांत्रोक्त नव-स्तोत्र का २७ पाठ करे और तांत्रोक्त नारियल को किसी मंदिर में चढा दे | नव ग्रह मुद्रिका को २७ दिन तक धारण करे |

ग्रह कवच स्तोत्र

ॐ ह्रां ह्रीं स: मे शिर: पातु श्री सूर्य ग्रह पति: |

ॐ घौं सौं औं मे मुखं पातु श्री चन्द्रो ग्रह राजक: ।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रां स: करो पातु ग्रह सेनापति: कुज: ।

पायादंशं ॐ ह्रौं ह्रौं ह्रां स: पादौ ज्ञो नुपबालक: |

ॐ औं औं औं स: कटिं पातु पायादमरपूजित: ।

ॐ ह्रौं ह्रीं स: दैत्य पुज्यो हृदयं परिरक्षतु ।

ॐ शौं शौं सः पातु नाभिं मे ग्रह प्रेष्य: शनैश्चर: ।

ॐ छौं छां छौं सः कण्ठ देशं श्री राहुर्देवमर्दक: |

ॐ फौं फां फौं सः शिखी पातु सर्वांगमभितोऽवतु |

ग्रहाश्चैते भोग देहा नित्यास्तु स्फुटित ग्रहा: ।

एतदशांश सम्भूता: पान्तु नित्यं तु दुर्जनात् । अक्षयं

कवचं पुण्यं सूर्यादि ग्रह दैवतम् । पठेद् वा पाठयेद्

वापि धारयेद् यो जन: शुचिः । स सिद्धिं प्राप्नुया-

दिष्टां दुर्लभां त्रिदशस्तुयाम् । तव स्नेह वशादुक्तं

जगन्मंगल कारकम् ग्रह यन्त्रान्वितं कृत्वाभीष्टम-

क्षयमाप्नुयात् ।

३) संकट, पीडा एवं बाधा निवारण-दुर्गा साधना:

विधान:वर्ष भर तक सभी संकट, पीडा आदि से बचने के लिये एवं उन बाधाओं का पुर्व आंकलन प्राप्ति हेतु चण्डि मंत्र का जप मुंगा या चण्डि माला से २१ माला जप करे |

मंत्र: || ॐ चण्डे फु: ||

सामाग्री: मुंगा या चण्डि माला

जप संख्या: २१ माला

साधक होली एवं ग्रहण काल में उपर दिये साधना के अतिरिक्त पुराने कोई भी साधना संपन्न कर सकते है | और इन पर्वो पर एक से आधिक साधनयें संपन्न कर समय का पूर्ण उपयोग कर सकते है | होलि साधना समय सूर्यास्त से ले कर अगले दिन सूर्योदय तक होता है और इस बार का चन्द्र – ग्रहण काल सायं ३:२० से सायं ६:५० तक है |

- गुरुकृपा

****